Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.gisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2024 GISRRJ | Volume 7 | Issue 2 | ISSN : 2582-0095

मूल्य शिक्षा एवं मूल्यपरक महाकाव्य रामायण

डा. आरती शर्मा
सहायकाचार्य, शिक्षापीठ, श्री लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली

Article Info
Article History
Accepted : 25 March 2024
Published : 05 April 2024

Publication Issue :
Volume 7, Issue 2
March-April-2024

Page Number : 71-74

शोधसार (Abstract) - संस्कृत वाङ्मय में वेदों को सर्वश्रेष्ठ एवं सर्वोच्च माना गया है। ये मानव के लिए ज्ञाननिधि हैं। वेदों का ज्ञान विश्व संस्कृति की आधार शिला माना जाए तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। आदिकवि महर्षि वाल्मीकि ने वैदिक परम्परा से प्राप्त धर्म के स्वरूप पर काल का स्वर्णोदक चढ़ाते हुए उसे अत्यन्त भव्य रूप में मानव मात्र के लिए समर्पित किया है। मानव मन की तीन मूल वृत्तियाँ हैं- बुद्धिवृत्ति, भाववृत्ति एवं संकल्पवृत्ति। विज्ञान प्रथमवृत्ति की परितृप्ति का साधन है। काव्य का सम्बन्ध भाववृति में होता है और अन्य ज्ञान-विधायें संकल्पवृत्ति को तृप्त करती है। वाल्मीकि जैसे ऋषि एवं मनीषी महाकाव्य जीवन के मूलतत्त्व सत्यम्, शिवम् और सुन्दरम् के चित्रण से सम्पूर्ण मानव मन को परितृप्त करता है। अत: रामायण मूल्यपरक महाकाव्य है। प्रस्तुत शोध लेख में मूल्य शिक्षा के विषय में चर्चा करते हुए मूल्यपरक महाकाव्य रामायण में वर्णित मूल्यों के विषय में जानेंगे।

मुख्य शब्द - मूल्य, मूल्यपरक शिक्षा।

प्रस्तावना- मूल्य किसी वस्तु या स्थिति का वह गुण है जो समालोचना व वरीयता प्रगट करता है। यह एक आदर्श या इच्छा है जिसे पूरा करने के लिए व्यक्ति जीता है तथा आजीवन प्रयास करता है।

ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोश में मूल्य को महत्ता, उपयोगिता, वांछनीयता तथा उन गुणों, जिन पर ये निर्भर हैं, के रूप में परिभाषित किया गया है। हम यहाँ विभिन्न विद्वानों की दृष्टि में मूल्यों की परिभाषा बता रहे हैं।

सी. वी. गुड के मतानुसार- "मूल्य वह चारित्रिक विशेषता है जो मनोवैज्ञानिक सामाजिक और सौन्दर्य-बोध की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण मानी जाती हैं लगभग सभी विचार मूल्यों के अभीष्ट चरित्र को स्वीकार करते हैं।"

मिल्टन का मानना है कि "जीवन मूल्य ओस की बूंदों के सदृश नहीं है जो मौसम के अनुसार दिखाई दें। इनकी जड़ें प्रत्येक प्राणी में बहुत गहरी होती हैं तथा इनका वास्तविकता से घनिष्ठ सम्बन्ध है।"

आलपोर्ट के अनुसार "मूल्य एक मानव विश्वास है जिसके आधार पर ननुष्य वरीयता प्रदान करते हुए कार्य करता है।"

मूल्य शिक्षा की अवधारणा अपेक्षाकृत आधुनिक एवं व्यापक है। परम्परागत रूप से धार्मिक शिक्षा, नैतिक शिक्षा आदि जो प्रचलित हैं, उससे यह भिन्न है। मूल्य शिक्षा से अभिप्राय उस शिक्षा से है जिसमें हमारे नैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक मूल्य समाहित हों। इसमें विभिन्न विषयों को मूल्यपरक बनाकर उनके माध्यम से विभिन्न मूल्यों को छात्रों को व्यक्तित्व के समाहित करने पर बल दिया जाता है, जिससे उनका सन्तुलित एवं सर्वतोन्मुखी विकास हो सके।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License.

जीवन मूल्य वे हैं जो जीवन जीने की कला सिखाते हैं। आज के मानव में इन जीवन मूल्यों का अभाव–सा होता जा रहा है। आज के मनुष्य को मात्र अपने सुख–भोगों की पड़ी है। वह इसके लिए दूसरों के सुखों की बलि दे देता है। चाहे दूसरों के सौ कार्य बिगड़ जावे पर अपना कार्य सिद्ध हो जावे ऐसी भावना के कारण आज का मनुष्य चन्द धनराशि के पीछे दूसरों की भावना का गला घोंट देता है, जबकि उसे यह नहीं पता कि दूसरों की भावना की कद्र करने में सच्ची मानवता है और इसी में सच्चा सुख है।

मूल्यपरक शिक्षा के उद्देश्य- मूल्यपरक शिक्षा में वे सभी उद्देश्य समाहित हैं, जो एक आदर्श शिक्षा के हो सकते हैं। संक्षेप में कहा जा सकता है कि मूल्यपरक शिक्षा का उद्देश्य है– सभ्य व्यक्तित्व का निर्माण ।

विद्यालय शिक्षण स्तर पर मूल्यपरक शिक्षा के निम्न उद्देश्य हो सकते हैं–

1– विद्यार्थियों में सद्भावना, प्रेम, दया, करूणा, क्षमा, त्याग, सत्य एवं अहिंसा आदि गुणों का विकास करना।

2– व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में एक आदर्श नागरिक का निर्माण करना।

3– देश की सामाजिक आर्थिक परिस्थिति के सम्बन्ध में छात्रों में जागरूकता और प्रोत्साहन प्रदान करना।

4– छात्रों को अपने विचार एवं व्यवहार में उदार एवं सच्चरित्र बनाना।

5– वे हीनभावना को छोड़कर बुद्धिमान् बनें।

6– छात्रों के मन में अपने मित्रों के प्रति स्वस्थ दृष्टिकोण का विकास करना।

7– स्वदेश के प्रति देशभक्ति भावना उत्पादित करना।

8– जीवन और पर्यावरण के सन्दर्भ में जनजागृति उत्पन्न करना।

9– सभी धर्मों एवं संस्कृति के प्रति श्रद्धाभाव उत्पन्न करना।

10– देश की सार्वजनिक सम्पत्ति को अपनी मानकर उनकी सुरक्षा के प्रति जागरूक बनाना।

इसके अतिरिक्त राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् ने मूल्यपरक शिक्षा के निम्नांकित उद्देश्य स्वीकार किये हैं–

1. नैतिक, सौन्दर्यात्मक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संवेदना का विकास करना।
2. छात्रों को जनतंत्र, धर्मनिरपेक्षता, समानता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण को समझाना और इन मूल्यों के योग्य बनाना।
3. विद्यार्थियों में इसका विकास करना और उनके प्रति प्रतिबद्ध करना।
4. विद्यार्थियों को इन मूल्यों के अनुसार जीवन जीने और अभ्यास के लिए अवसर प्रदान करना।

मानव मूल्यों के स्रोत क्या हैं। मानव मूल्य कहाँ से निकलते हैं। हम कहाँ से मूल्यों को प्राप्त करते हैं। सैद्धान्तिक जीवन में मूल्य विचार और चेतना से उत्पन्न होते हैं, परन्तु व्यवहार में मूल्यों के स्रोत हैं संविधान (Constitution), संस्कृति (Culture) और धर्म। इनमें संस्कृति मूल्यों का सबसे बड़ा और प्रमुख स्रोत है। संसार में सब कहीं लोग अपनी विशिष्ट संस्कृति से ही मूल्य प्राप्त करते हैं। संस्कृति के बाद धर्म मूल्यों का स्त्रोत है। हिन्दू, बौद्ध, इस्लाम और ईसाई धर्म अपने अनुयायियों को जीवन मूल्य बतलाते हैं। धर्म ग्रन्थों में जीवन मूल्यों का उल्लेख होता है। अन्त में प्रत्येक सभ्य देश का संविधान के मूल्य दिखलाता है, जिनको वह विशिष्ट समाज मानता है। संस्कृति सामाजिक मूल्यों (Social Values) का सबसे बड़ा स्रोत है। सामाजिक मूल्य वे सामाजिक मानदंड (standard), लक्ष्य या:आधार पर विभिन्न सामाजिक परिस्थितियों तथा विषयों

का मूल्यांकन कि मूल्य हमारे लिए कुछ अर्थ रखते हैं और उन्हें हम अपने सामाजिक जीवन के महत्वपूर्ण समझते हैं। इन मूल्यों की एक सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि होती है ।

संसार मानव धर्म का अनुयायी है। धर्म का सम्बन्ध दर्शन और अध्यात्म दोनों से है। विश्व के सभी दर्शनों ने धर्म की चर्चा की है। धर्म शब्द ' धृञ धारणे' धातु से 'मन्' प्रत्यय लगाने से निष्पन्न होता है, जिसका अर्थ होता है- धारण, पोषण एवं रक्षण करना। ऋग्वेद में धर्म शब्द का प्रयोग छप्पन (56) बार हुआ है. कहीं 'नीतिनियम' के अर्थ में 'कहीं आचार के अर्थ में तो कहीं 'पोषक तत्त्व के अर्थ में।

महर्षि याज्ञवल्क्य ने योग की विधि से आत्मदर्शन को परम धर्म और यज्ञ अध्ययन, दान आदि को देश-काल सापेक्ष धर्म माना है' अयं तु परमो धर्मो यद् योगेनात्मदर्शनम्।" वैशेषिकदर्शन में महर्षि कणाद ने कहा है कि जिससे मानव का अभ्युदय और कल्याण हो वह धर्म है-

'यतोऽभ्युदयानि: श्रेयससिद्धि: स धर्म:।

इसी प्रकार मनुस्मृतिकार आचार्य मनु ने भी धर्म को सर्वश्रेष्ठ माना है। धर्म के दस लक्षण लिखते हुए आचार्य मनु कहते हैं-

धृति: क्षमादमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रह:।

धीर्विधा सत्यम क्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्।।

महर्षि वाल्मीकि ने धर्म के नैतिक मूल्यों को यथावत् अपने काव्य में वर्णित किया है, परन्तु अन्य धर्म ग्रन्थों में धर्म का जो स्वरूप निरूपित हुआ है, वह बहुलतया वाल्मीकि द्वारा विभिन्न स्थलों पर वर्णित धर्म प्रत्ययों पर आधारित है। अपने पुत्र धर्म को निभाने के लिए राम वन जाने के समय राजा दशरथ से औपचारिक अनुमति लेने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए जाते हैं और कहते हैं-

अनुजानीहि सर्वान् न: शोकमुत्सृज्य मानद।

लक्ष्मणं मां च सीतां च प्रजापतिरिवात्मजम्।।

इस संवेदनशील क्षण में दशरथ ने राम को वन जाने की अनुमति देते हुए निम्न अनमोल वचन कहा

श्रेयसे वृद्धये तात् पुनरागमनाय च।

गच्छस्वारिष्टमव्यग्र: पन्थानमकुतोभयम्।।"

वैदिक परम्परा का पालन करते हुए राजा दशरथ ने राम को 'सत्यात्मा' और 'धर्माभिमना' कहा है। सत्य और धर्म के निकट सम्बन्ध, अन्त: परिवर्त्यता आदि को महर्ष...

सत्यमेवश्वरो लोके सत्ये धर्म: सदाश्रित:।

सत्यमूलानि सर्वाणि सत्यान्नास्ति परं पदम् ।।

दत्तमिष्टं हुतं चैव तप्तानि च तापांसि च।

वेदा: सत्यप्रतिष्ठानास्तस्मात्सत्यपरो भवेत्।।

पुन: राज्य देने के लिए कहते हैं-

सान्विता मामिका माता दत्तं राज्यमिदं मम।

तद् ददामि तवैवाहं भुड्क्ष्व राज्यमकण्टकम्।।

महर्षि वाल्मीकि ने रावण का सन्दर्भ प्रकट करते हुए कहा है कि धर्म से च्युत होना, परदाराभिमर्शनकरना और सुहृदों पर अतिशय शंका करना, ये तीनों दोष अधर्म कारक और विनाशकारी होते हैं ।

परस्वानां च हरणं परदाराभिमर्शनम्।

सुहृदामतिशङ्का च त्रयो दोषाः क्षयावहाः ।।

इतना ही नहीं राम एक धर्मनिष्ठ मनुष्य थे। कवि ने राम के विषय में कहा है कि जो राम को नहीं देख पाता या जिसे राम देख नहीं पाते, वह सभी लोकों में निन्दित समझा जाता था तथा वह स्वयं भी अपने का कोसता था –

यश्च रामं न पश्येत्तु यं च रामो न पश्यति ।
निन्दितः सर्वलोकेषु स्वात्माप्येनं विगर्हते ।।

स्पष्टतः कहा जाता है कि राम की इसी लोकोत्तर लोक प्रियता उनके गुण, शील, स्वभाव, धर्मभाव दया एवं समदर्शिता पर आधारित उनका सुचरित था। इसलिए प्रत्येक मानव को अपने जीवन में सत्यनिष्ठ एवंधर्मनिष्ठ होना चाहिए ।

सन्दर्भग्रन्थ सूची –

1. शर्मा, रमा, शर्मा वी.पी., मूल्य शिक्षा, अर्जुन पब्लिशिंग हाउस, 2019, दिल्ली।
2. पाठक, प्रो. रमेश प्रसाद, मूल्य शिक्षा, कनिष्का पब्लिशर्स हाउस, 2020, दिल्ली।
3. याज्ञवल्क्यस्मृति 1.8
4. वैशेषिकदर्शनम्, प्रथमोऽध्यायः, प्रथम आह्निकः 1
5. मनुस्मृति 6.8
6. वाल्मीकि रामायण 2.34.24
7. वाल्मीकि रामायण 2.34.31
8. वाल्मीकि रामायण 2.14.3.\
9. वाल्मीकि रामायण 2.14.7
10. वाल्मीकि रामायण 2.109.13-14
11. वाल्मीकि रामायण 2.96.31
12. वाल्मीकि रामायण 2.105.4
13. वाल्मीकि रामायण 6.87.23
14. वाल्मीकि रामायण 2.17.14